रविवार, दिनाँक 17-12-2023 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

कैसा प्यारा है रंग हृदय उठे उमंग।

आ आ आ आ आ, कैसा प्यारा है रंग हृदय उठे उमंग।।

इस रंग दा पाया श्री राम जी ने बाना, जगत देख होवे मस्ताना।

ए रंग धुर दा आया, कैसा प्यारा है रंग हृदय उठे उमंग।।

इस बाने ने साजन जी नूं है ओ सजाया, नाले हनुमान जी ने वी पाया।

ए रंग धुर दा आया, कैसा प्यारा है रंग हृदय उठे उमंग।।

ए रंग इलाही आया, ए रंग पातशाही आया।

ए रंग कोई विरला जाणे, ए रंग कोई विरला पछाणे।।

कैसा प्यारा है रंग, हृदय उठे उमंग।

सजनों कल से जो चालीसे के यज्ञ का शुभारम्भ होने वाला है, उसकी आप सबको बहुत-बहुत मुबारिक हो। जानो सजनों इस यज्ञ को जो विधिवत् निभाने का पुरुषार्थ दिखाता है, उसके अन्तर्घट में चालीस दिनों में ही इस तरह स्वाभाविक परिवर्तन आ जाता है कि फिर उसके लिए एकता, एक-अवस्था में पूरी उम्र सधे रहना कोई कठिन काम नहीं रह जाता। इस तरह यह इलाही रंग हमें यही सन्देश देता है कि अपने बिखरे हुए ख़्याल को समेटकर एकता में साध लो। एकता में साधने का अर्थ है कि अपने असली घर में हर समय बने रहो ताकि मन में कोई भी दुर्भाव पैदा ही न हो। यहाँ दुर्भाव से तात्पर्य दो के भाव से है और एकता से आशय सजनता के प्रतीक ऐक्य-भाव में बने रहने से है।

इस संदर्भ में हमें याद रखना है कि जब भी हम अपने मन-वचन-कर्म द्वारा, किसी के भी साथ, सजन भाव के विपरीत आचरण या व्यवहार करते हैं तो हम अपनी कुदरत प्रदत्त

श्रेष्ठता से गिर रहे होते हैं। सजनों ऐसा नहीं करना क्योंकि जो भी इन चालीस दिनों में यह सावधानी दिखाने का पुरुषार्थ दिखायेगा, वही इस यज्ञ में सफलता प्राप्त कर, मन वांछित फल प्राप्त कर पायेगा यानि अन्दर-बाहर से हर्षा उठेगा। यह सब सुनने-समझने के पश्चात् सजनों अब आपकी किस्मत बनाना या बिगाड़ना आपके अपने हाथ में है।

आगे जानो कि सजन-भाव का वर्त-वर्ताव इसलिए भी आवश्यक है - क्योंकि त्रेता युग से आरम्भ हुआ भिन्नता का भाव आज मनुष्यों के अन्दर बढ़ता-बढ़ता इतना अधिक व्याप्त हो गया है कि व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक व वैश्विक रूप पर देखने से भी कहीं एकता का भाव नजर नहीं आता। आशय यह है कि व्यक्ति सामने कुछ और पीछे कुछ है। चारों तरफ माया का खेल चल रहा है, इधर भी माया, उधर भी माया, चारों तरफ माया ही माया यानि माया ने घेरा डाल रखा है और बीच में फँसा जीव परेशान है। हम पूछते हैं कि इस मायाजाल में आपको किसने फँसाया?

'मौन'।

निश्चित रूप से   पालन करने वालों ने। ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि यह अभिभावक ही हैं जिन्होंने जन्मोपरान्त बच्चे के अन्दर यथार्थ ज्ञान के प्रगट होने के पश्चात्, उसे विकसित करने हेतु अनुकूल वातावरण प्रदान नहीं किया अन्यथा तो उसके अन्दर आध्यात्मिक ज्ञान का विकास हो जाता और आप कर्त्तव्यपरायण माता-पिता कहलाते। जानो यह महादोष है और अब इस दोष को सुधारना कोई आसान बात नहीं है। इसङ्का मुख्य कारण है कि आप माता-पिताओं ने अपने बच्चों को बाल्यावस्था से सत्संग में न लाने की कमज़ोरी दिखाई और आप कमज़ोर पर कमज़ोर पड़ते गये। अब तो आपके हाथ में कुछ नहीं रहा, यह कितनी गलत बात है। इतना होने पर भी सजन श्री शहनशाह महाबीर जी के द्वारे से आपको सुख प्रदान करने हेतु कुदरत के हुक्म अनुसार तरह-तरह के प्रयास हो रहे हैं पर विडम्बना की बात यह है कि वहाँ भी आप मेहनत करने में कमज़ोर पड़ रहे हो क्योंकि आप अपने परिवारों को आगे नहीं करते।

इस सन्दर्भ में सजनों अब दिनाँक **24** और **25** दिसम्बर को जो आध्यात्मिक क्रान्ति का प्रोग्राम हो रहा है, वह निश्चित ही आपके जीवन को बदल कर उन्नति पथ पर प्रशस्त करने हेतु है। अब चाहो तो उसका लाभ उठाओ अन्यथा आपकी अपनी मर्जी है। जानो यह उसी प्रकार है जैसे कुदरत इन्सान बनाती है और उसके बीच में एक जीव बनाकर उसको स्वतन्त्र छोड़ देती है। स्वतन्त्र छोड़ा हुआ इन्सान आत्मिक ज्ञान अनुरूप समुचित पुरुषार्थ दिखाने के अभाववश कुकर्म-अधर्म के रास्ते पर आगे बढ़ जाता है और मायाजाल में उलझकर उस माया का गुलाम हो जाता है। माया को एकत्रित करने में चाहे उसे कितने ही नीच से नीच कर्म क्यों न करने पड़ें, वह झिझकता नहीं अपितु उसके लिए तत्पर रहता है क्योंकि उसकी प्रीति माया से हो जाती है। फिर जब माया डंग मारती है तब फिर वह रोता है जबकि द्वारे की नीति है कि मायातीत रहो। मायातीत रहते तो वास्तविक अमीरी यानि सत्य आत्मिक ज्ञान प्राप्त हो जाता और आप अपना जीवन सफल बना पाते।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों जानो कि यह गुलानारी रंग हमें चारों वर्णों की एकता का, हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई की एकता का पाठ पढ़ाता है यानि यह समझाता है कि कीड़ी से लेकर हाथी तक, ब्रह्मा से लेकर तृण तक सब एक हैं। हम इस यथार्थ को अपनाने योग्य बन जाएँ इस हेतु सजनों हमें सजन शब्द का इस्तेमाल करना है। यह काम सर्वप्रथम घर से शुरु करना है यानि सबके साथ सजन जी करके बोलना है और यही आदत अपने परिवार वालों को भी डालनी है। फिर सत्संग हाल में या वसुन्धरा परिसर में जब तक आप हो, सजन शब्द का ही वर्ताव दिखाना है और किसी ने आपस में कोई घरेलू यानि घर-परिवार की बातें नहीं करनी। जानो यह एक शुरुआत करने की बात है। अतः वसुन्धरा परिसर में सत्संग से जो आपको सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के सद्-विचार प्राप्त होते हैं, बस उसके बारे में ही बात करनी है। इस संदर्भ में सबने अपने पर अंकुश रखना है। अगर कोई ऐसा नहीं कर सकता तो उसने सिर्फ चुप रहना है जैसा कि सच्चेपातशाह जी कहते हैं:-

साजन जी जिव्हा कर जावे उन्हां दी चुप, फिर ख्याल न राहवे सोचां विच

सजनों कहने का तात्पर्य यह है कि जो नीति है उस अनुसार अफुर अवस्था में सधे रहना है। याद रखो इस अफुर अवस्था में यदि इन चालीस दिनों में आपने अपने मन को साधने की हिम्मत दिखाई तो निश्चित ही आपकी फ़तह है। ऐसा इसलिए क्योंकि ऐसा करने पर आपके अन्तर्घट से कलुषित विचार समाप्त हो जायेंगे और सद्-विचारों का उद्भव होगा जो आपकी मानसिकता को निर्मल बनायेगा और आप मन वांछित फल जीवनोद्धार के रूप में सहजता से प्राप्त करने के योग्य बन जाओगे। सो सजनों अपने हित के लिए इन चालीस दिनों में संसारी बातों के कनरस यानि सांसारिक वृत्तियों की तरफ से अपने मन को शान्त अथवा दूर रखो। जानते हो ऐसा करने से क्या होगा?

'मौन'।

ऐसा करने से जो भी आपने अभी बोला है कि 'ए रंग इलाही आया, ए रंग पातशाही आया', आपका मन इलाही रंग में रंगा जायेगा और इलाही रंग में रंगते ही आप आत्मज्ञानी बन जाओगे। अब इस आध्यात्मिक क्रान्ति द्वारा यही होने जा रहा है। इस प्रयास में आप सब सफल हों इस हेतु सजनों अपने पख-परिवार के सजन बनो यानि सबको जागृति में आकर अपना आत्म-सुधार व आत्मोद्धार करो और फिर सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर आगे बढ़ते हुए परोपकार प्रवृत्ति में ढलो। जानो यह ब्रह्म नाल ब्रह्म हो जाने की मंगलकारी बात है। अब जो ऐसा पुरुषार्थ दिखाने के लिए दिल से तैयार हो वह ताली बजा सकता हैः-

(पूरा हाल तालियों की आवाज़ से गूँज उठा)

सजनों अगर यह ताली सत्यता का प्रतीक है तो मान लो कि आप अपना भाग्योदय करने में सफल होने वाले हो। अगर ऐसे सफलता प्राप्त हो गई तो कुदरत आपको जिस शक्ति से भरपूर कर देगी, उस विषय में अब ध्यान से सुनोः-

महाबीर आप पवाया जी, ए गदा सोहणा लगदा।

दासी दे दिल नूं भाया जी, ए गदा सोहणा लगदा।।

मैं नहीं कोई नज़र न आवे, गदा महाबीर जी पाया जी।

ए गदा सोहणा लगदा, महाबीर आप पवाया जी।।

ए गदा हीरियां जड़त जड़ाया, सब दे दिल नूं भाया जी।

ए गदा सोहणा लगदा, महाबीर आप पवाया जी।।

इस गदा ने सारी उमर चरणां विच गुज़ारी, सियाराम मिलाया जी।

ए गदा सोहणा लगदा, महाबीर आप पवाया जी।।

इस गदा ने तीनों ताप मिटाये, कोई झगड़ा न आया जी।

ए गदा सोहणा लगदा, महाबीर आप पवाया जी।।

ए गदा राम जी दे प्यारे ने पाया रघुनाथ जी दिल विच हर्षाया जी।

ए गदा सोहणा लगदा, महाबीर आप पवाया जी।।

इस गदा ने देवतियाँ दी आस पुजाई, राक्षसां नूं मार मुकाया जी।

ए गदा सोहणा लगदा, महाबीर आप पवाया जी।।

जिस दासी ने ए गदा जो पाया, यम ओन्हां दे निकट नहीं आया।

मौत दा भय हटाया जी, ए गदा सोहणा लगदा, महाबीर आप पवाया जी।।

सजनों इस भजन द्वारा परोपकारी श्री साजन जी कलुकालवासियों को पुनः उनकी वास्तविक शक्ति व गुणों से परिचित कराने के प्रति उत्साहित करने का भरसक प्रयास कर रहे हैं। इस सन्दर्भ में सच्चेपातशाह जी स्वयं के विषय में बताते हुए कहते हैं कि जैसे ही हम बहिर्मुखी भक्तिभावों से स्वतन्त्र हो, अपने ख़्याल को अन्दरूनी वृत्ति में जोड़ने में सफल हो गये तो मन में स्वयंमेव ऐसी जागृति पैदा हुई कि इस संसार से जो कुछ भी हमने भाव-स्वभाव के रूप में प्राप्त किया था, वे सब त्याग दिया। उस त्याग उपरान्त हमने अपनी धारणा मे केवल वही विचार स्थित रखे जो सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का संग प्राप्त होने पर हमें मिले। यह होता है सजनों यकदम स्वार्थ से परमार्थ बन जाना यानि बुद्धि का

पलटा खा जाना। जब किसी की भी बुद्धि इस तरह पलटा खा जाती है तो विवेकशक्ति ताकतवर हो जाती है। जब विवेकशक्ति ताकतवर हो जाती है तो समझ आ जाता है कि ख़्याल को दुनियाँ के साथ जोड़ना उचित है या फिर अपने सच्चे घर में ही स्थित रखना उचित है। सच्चे घर में ख़्याल को स्थित रखने से सुरत यानि हमारी चेतना शक्ति ताकतवर बन जाती है और किसी के घेरे में नहीं आती। फिर हमें जो भी इन पाँच ज्ञानेन्द्रियों से महसूस होता है, हम उसके सत्य को परखने योग्य हो जाते हैं यानि यह जान जाते हैं कि यह माया है या वास्तविक है? अगर तो वह माया होती है तो हम समझ जाते हैं कि इसको प्राप्त करने की लालसा अपने मन में पैदा करना उचित नहीं है क्योंकि वास्तव में इसे प्राप्त करके भी हम खाली ही रहने वाले हैं यानि इससे हमारी भूख नहीं मिटने वाली अपितु और बढ़ने वाली है। इसके विपरीत यदि वह वास्तविकता होती है तो हमें उस सत्य को ग्रहण कर लेते है।

सजनों जब सच्चेपातशाह जी ने ऐसा परम पुरुषार्थ दिखाया तो सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने उन्हें शान्ति-शक्ति का हथियार बख़्श दिया। मानो सजनों यह बख़्शीश अपने आप में सर्वोत्तम है। जानो जहाँ पर शान्ति-शक्ति का हथियार है वहाँ कोई भी आपके मन को भेद कर भीतर प्रवेश नहीं कर सकता। तो फिर पाँच विकारों की क्या हस्ती है, क्या शक्ति है उनकी कि वह बाहर से आयें और हमारे अन्दर प्रवेश कर जाएँ? सजनों मानो अगर यह विकार अन्दर प्रवेश करते हैं तो इन्सान को कमज़ोर कर देते हैं और उसकी विवेकशक्ति इस प्रकार क्षीण कर देते हैं कि वह जीवित होते हुए भी शक्ति-विहीन यानि मरा हुआ होता है क्योंकि वह अपने यथार्थ स्वाभाविक स्वरूप में आने की हिम्मत ही नहीं जुटा पाता।

इस सन्दर्भ में इस हथियार की प्रशंसा करते हुए व इसका गुणगान करते हुए, सच्चेपातशाह जी कुल ब्रह्माण्ड के सजनों के अन्दर इसकी प्राप्ति की अभिलाषा जगाने हेतु, उन्हें उत्साहित करते हुए कहते हैं कि इस शान्ति-शक्ति के हथियार को प्राप्त करने को प्राथमिकता दो, ताकि आपका मन-मस्तिष्क स्थिर रहे और आप कुल दुनियाँ पर विजयी हो सको। इस तरह हमारे मन में वास कर गए काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी राक्षस जिन्होंने हमें दिन-रात परेशान कर हमारा चैन छीन रखा है, वह सब समाप्त हो जाए। जानो मन से इन विकारों का उन्मूलन हो जाने पर हमें किसी का भय नहीं सताता और हम

अपनी क्षमताओं को समझ तद्नुरूप अपनी भावनाओं का निर्माण कर सकते हैं और अपने जीवन का लक्ष्य सहज ही इसी जीवन में प्राप्त कर सकते हैं।

आगे सजनों जानो कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी इसी हथियार के बलबूते पर ही सबसे श्रेष्ठ, विद्वान, गुणवान व बलवान कहलाए। आशय यह है कि जिस किसी के पास भी यह हीरों से जड़ित हथियार होता है, उसको किसी और चीज़ की आवश्यकता नहीं रहती यानि वह सजन सबका दाता-दातार हो जाता है। आकाशों-आकाश उसकी सुरत की पहुँच हो जाती है। फिर जब वह सुरत अपने स्थान को प्राप्त कर लेती है तो मौत का भय नहीं रहता। मौत का तो सवाल ही पैदा नहीं होता क्योंकि अमरता की प्रतीति हो जाती है। इस अवस्था में आने पर हम समभाव नज़रों में कर सजन वृत्ति पकड़ने के योग्य हो जाते हैं और समदृष्टि होकर दिव्य-दृष्टि हो जाते हैं यानि तीनों कालों को जानने वाले हो जाते हैं। इस तरह इस हथियार को ग्रहण करने पर हम सर्व-शक्तिमान व सर्वज्ञ हो जाते हैं यानि सबके दिलों की जानने वाले हो जाते हैं। अब जब सर्वव्यापकता है यानि सब में एक ही जोत है, तो फिर भिन्न-भेद कैसे पैदा हो सकता है? अब सुरत भी कंचन और शब्द भी कंचन। इस तरह जब सब एकरूप हो जाते हैं तो भेद कहाँ रहा यानि सब अभेद हो जाता है।

अतः सजनों इन चालीस दिनों का महत्त्व समझो। यह कोई खेल नहीं है या कोई केवल सरसरी नियम/ढदृद्धश्ल्ड्ढथ्त्द्यद्ग नहीं है जिसे पूरा करना ही है। दिल से सम्पन्न करने पर यह नीति तो सद्परिणाम देने वाली है। अतः हमें वह सद्परिणाम प्राप्त करना है। इस हेतु चालीस दिन की जो भी युक्ति है, उसको पढ़-समझकर पूरी लगन और नीयत से उस पर यथा स्थिरता से बने रहना है। ऐसा करने पर हम चालीस दिन में ही जन्म की बाज़ी जीत सकते हैं। अतैव अब किसी भी परिस्थिति में अपने आपको चलायमान मत होने देना। इसी परिप्रेक्ष्य में सच्चेपातशाह जी कहते हैंः-

इस्थर रहहू, डोलहू मत कबहू, गुर कै बचनी अधारी

ठीक है?

'हाँ जीं'।

तो फिर प्रेम से बोलोः-

बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय

बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय

बोल सजन श्री शहनशाह महाबीर बजरंग बली जी की जय

सजनों अब आपका उत्साह और अधिक मज़बूत हो इसके लिए आपको बताते हैं कि शान्ति-शक्ति का हथियार धारण करने के बाद सजन में कैसे परिवर्तन होता है और इन्सान क्या से क्या बन जाता है? - इस बात को अब ध्यान से सुनोः-

(श्री महाबीर जी के मुख के शब्द)

शब्दः-

राम रटन ओथे लग रही लगे सारे लोक।

लोक लगे परलोक लगे, रटन एहो श्लोक, ओ ओ ओ ओ ओ।।

हो गई बख्शीश उस दयालु बख़्शन्द दी, हो गई बख्शीश।

हो गई असीस उस आनन्द कन्द दी, आनन्द कन्द दी।।

शेष ते विराजमान, सैन करो विश्रामी पलंग।

निर्वाण दे अन्दर जोत ओ चमके, चमके सर्व ही अन्दर, चमके सर्व ही अन्दर।।

निर्मल तेरी ओ जोत साजन, निर्मल ही निर्वाण हुआ।

निर्मल आद अन्त तूं भासे, निर्मल कुल जहान हुआ, निर्मल कुल जहान हुआ।।

निर्मल वृति निर्मल स्मृति, जैं सूक्ष्म युक्ति वल ध्यान दिया।

निर्मल पा लिया बाणा उसने अपना आप पहचान किया, ओ अपना आप पहचान किया।।

(श्री साजन जी कह रहे हैं)

इन्सानां विच वसदा दिसदा हां, खावां पीवां खिड़ खिड़ के पिया हसदा हां।

एहो मन विच करो विश्वास सजनों मेरी सुन लौ बात, सजनों मेरी सुन लौ बात।।

(श्री रामचन्द्र जी कह रहे हैं)

सतवस्तु दी निर्मल बुद्धि उच्च बुद्धि कहाई।

निर्मल बुद्धि, निर्मल बाणी, पवित्र रचना दिखाई, साजन जी पवित्र रचना दिखाई।।

सतवस्तु दा बगीचा देखो कैसी सुगन्धि आई।

चार वेद छः शास्त्र समझ न सकन, कैसी पदवी पाई,साजन जी ने कैसी पदवी पाई।।

(श्री साजन जी कह रहे हैं)

जीव जन्तु में भासदा जापदा, एह मेरा समझो इतिहास।

जड़ चेतन में मेरा प्रकाश, सजनों मेरी सुण लौ बात, सजनों मेरी सुण लौ बात।।

ध्वनिः-

सजनों मेरी सुण लौ बात, दुनियां तों राहवो आज़ाद।।

सजनों जानो कि इस कीर्तन के द्वारा हमें कुल दुनियाँ से अपने ख़्याल को यानि अपनी सुरत को आज़ाद करने का शुभ सन्देश दिया गया है। इस संदर्भ में ऐसा नहीं कि ऐसा करने हेतु हमें घर छोड़कर कहीं चले जाना है अपितु हमें तो अपने सारे कर्त्तव्य धर्म-संगत अपने ख़्याल को दुनियाँ से आज़ाद रखते हुए करने हैं ताकि दुनियावी ज्ञान अनुसार अन्दर कोई नुक्सान पैदा न हो।

यहाँ समझने की बात यह है कि इस ब्रह्माण्ड का सत्य क्या है?

जानो यह सब जीव-जगत और परमात्मा का ही खेला है। जो इन्सान इस सत्यज्ञान से परिचित नहीं है, वह चाहे कितना ही बड़ा भौतिक साईंटिस्ट या शासक ही क्यों न हो, दूसरों को यथार्थ ज्ञान प्रदान करने में समर्थ नहीं हो सकता? अतः इनके पीछे भागना जीवन अर्थ हारने की बात है। इसलिए ईश्वर बार-बार कहते हैं कि हे मानव ! मेरी बात को समयानुकूल सुन और अपने मन-वचन को दुनियावी फुरनों वाले ज्ञान से आज़ाद रख अपने हृदय में स्वाभाविक परिवर्तन ले आ। जान ऐसा इसलिए कह रहे हैं क्योंकि इस ज्ञान को प्राप्त करके न तो आप परिपूर्ण रूप से धर्मज्ञ बन सकते हो और न ही सतवादी बन सकते हो। इस संदर्भ में हमें तीनों युगों में जो युद्ध हुए, उन हालातों को समझना है और उनसे सीख लेनी है कि यह ज्ञान हमें बड़े-छोटे के भाव में फँसाता है, इसीलिए सब जगह उत्पात हो रहा है। सो आपको बगैर अपनी बुद्धि लगाये यकदम अपने ख़्याल को इस फुरने वाले ज्ञान से आज़ाद करना है। आप ऐसा करने में सक्षम हो सको जानो इसलिए तो आध्यात्मिक क्रान्ति का प्रोग्राम रखा है। इस आयोजन द्वारा हम भाव स्वभाव परिवर्तन कर जीवन को सकारात्मक दिशा दे सकते हैं।

आगे सजनों जानो कि सच्चेपातशाह जी ने सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति का अनुशीलन कर जो पदवी प्राप्त की, उसे तीनों लोकों में कोई नहीं समझ सकता। यह देख कर तो जगत की रचना करने वाली कुदरत भी हैरान हो गई। इसीलिए उन्होंने कहा कि जो पदवी सच्चेपातशाह जी ने सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति पर स्थित रहकर व अपनी बुद्धि, स्मृति व स्वभावों का ताना बाना निर्मल रखते हुए प्राप्त करी, उसे चार वेद और छः शास्त्र भी नहीं समझ सके कि कैसे वह इतनी महान पदवी पा 'ईश्वर है अपना आप' के विचार पर खड़े हो गये। यह विचार कहता है सजनों कि ईश्वर मैं ही हूँ और मैं

ही सब में भासता हूँ। जब सर्व-सर्व मैं ही मैं हूँ तो कौन वैरी, कौन दुश्मन, कौन छोटा, कौन बड़ा? ऐसा पराक्रम दिखा यानि सबको समकर जान ही उन्होंने समभाव-समदृष्टि की युक्ति आगे प्रदान की। सजनों जानो कि समभाव-समदृष्टि की युक्ति को अपनाना, अपना ही उद्धार करने की बात है क्योंकि इस युक्ति को अपनाने पर न तो मन रहता है, न बुद्धि, न अहंकार और न ही चित्त। अब किसने, किसका आत्म-साक्षात्कार करना है? मैं ही तो परमात्मा हूँ, मैं ही तो रचनाकार हूँ, मैं ही तो सर्वज्ञ हूँ। जानो जब जीव प्रकाश नाल प्रकाश हो जाता है तो वह शब्दातीत हो आद् शब्द से भी ऊपर उठ जाता है क्योंकि आद् शब्द की साधना से जो प्राप्त होता है वह भी सब परमात्मा से ही आता है। अब जब मैं ही परमात्मा हूँ तो मुझे किसकी रटन लगानी है? क्या अपनी रटन लगाओगे? कहने का आशय यह है कि हम सब फुरनों से आज़ाद हो जाते हैं। इसमें कोई कठिन बात नहीं है। सजनों इसका मतलब है कि जब अन्तःकरण विशुद्ध हो जाता है तो न मन रहता है, न बुद्धि,न चित्त और न ही अहंकार, सब विशुद्ध व निर्मल हो जाता है। इस तरह हृदय प्रसन्न हो पवित्रता का प्रतीक बन जाता है। उस पवित्र हृदय से फिर जो प्राप्त होता है, वह सभी अपवित्र हृदयों को पवित्र करने वाले विचार होते हैं। यही सब के सब विचार सजनों सच्चेपातशाह जी ने सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के रूप में आपको प्रदान किए हैं ताकि आप भी और कुल संसार भी उत्तम भक्ति करते हुए अपनी सर्वोत्कृष्टता के प्रतीक बन सको। यह निर्मल सम्मान सजनों मानवता यानि धर्मानुरूप जीवन जीते हुए वास्तविक स्वाभिमान को व उससे भी ऊपर उठकर सतयुगी शान को प्राप्त होने की बात है। यह है शेषों पर विराजमान होकर अपने ब्रह्माण्ड का संचालन खुद करना। अब सजनों समय आ गया है ईश्वर का एकछत्र शासन स्थापित होने का, अतः सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि अब सम्भल जाओ, अपने जीवन को मत बिगाड़ो क्योंकि फिर जो अवधि आने वाली है वह बहुत, बहुत दुःखमय है। अतः अपने बचाव के लिए हमें होश में आना है और सबको होश में लाना है।

इसी सन्दर्भ में सबको होश में लाने के लिए ही आध्यात्मिक क्रान्ति प्रोग्राम हो रहा है। हो सकता है कुछ बच्चे होश में आ जायें और आपके घर-परिवारों का वातावरण बदल जाये। इस संदर्भ में अब सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के हुक्म अनुसार समभाव-समदृष्टि के भक्ति भाव पर स्थिर रहते हुए, अपने यथार्थ स्वरूप को जान एक रूपता के प्रतीक बन जाओ। इसी काम में अब यह चालीस दिन लगा देना। अन्दर-बाहर से कोई निन्दा-चुगली नहीं करनी, न ही आपका ख़्याल इधर-उधर भटके और न ही द्वि-द्वेष की दृष्टि हो। सजनों

कहने का तात्त्पर्य यह है कि जिव्हा स्वतन्त्र, ख़्याल स्वच्छ व दृष्टि कंचन रखनी है। यही है ब्रह्मचर्य जिसकी चालीस दिन आपको पालना करनी है और अपनी वास्तविक शान को प्राप्त होना है। अब आपको और उत्साहित करने के लिए बताते हैं कि जब आप सच्चेपातशाह जी की तरह अपनी वास्तविक शान को प्राप्त हो जाओगे तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ से उद्धृत क्या कीर्तन आपके समक्ष आयेगा, अब ध्यान से सुनोः-

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

सर्व राम रूप दिस्सां सर्व है स्थान मेरा।

सर्व जोत मेरी जगे, जगमगे जहान जेहड़ा, सर्व राम रूप दिस्सां।।

राम रूप हां घट घट वासी, राम रूप हां सर्व निवासी।

राम रूप मन मन्दिर सुहावा, राम हर अन्दर रहावा।।

सर्व राम रूप दिस्सां, सर्व है स्थान मेरा।

सर्व जोत मेरी जगे, जगमगे जहान जेहड़ा, सर्व राम रूप दिस्सां।।

(श्री हनुमान जी कह रहे हैं)

श्री राम दा दीदार है जे हीरा अनमोल ओय।

गरुड़ उत्ते साजन आये, श्री राम जी दे कोल ओय।।

शिव ब्रह्मा दी चिट्ठी आई, हनुमान जी सुनाई ए।

साजन जी फ़स्ट निकले, श्री राम नूं वधाई ए।।

सारी नगरी विच्चों फ़स्ट निकले, श्री राम नूं वधाई ए।

साजन जी फ़स्ट निकले, श्री राम नूं वधाई ए।।

बात बताई श्री राम जी, सुनाई हनुमान जी।

जोत मेरे साजन जी दी, जग रही महान जी।।

फ़स्ट निकले देश देशान्तर जोत जगे कुल जहान जी।

जोत मेरे साजन जी दी जग रही महान जी।।

इस पदवी ते कोई मुश्किल जावे, जेहड़ी पदवी साजन जी ने पाई ए।

शहनशाह ओ नगरी ऊपर, त्रिलोकी जैंदी शरणाई ए।।

त्रिलोकी जैंदी शरणाई ए, त्रिलोकी जैंदी शरणाई ए।

शहनशाह ओ नगरी ऊपर, त्रिलोकी जैंदी शरणाई ए।।

हनुमान जी ने बात बताई, श्री राम जी ने खोल सुनाई।

हो जी चतुर्भुजधारी, हर अन्दर है जोत तुम्हारी।।

हर अन्दर है जोत तुम्हारी, हर अन्दर है जोत तुम्हारी।

हो जी चतुर्भुजधारी, हर अन्दर है जोत तुम्हारी।।

श्री रामचन्द्र जी ने बाजा ओ दित्ता ए बजा।

आद अन्त ऐ जोत प्रकाशे, प्रकाश ओ रही जे दिखा।।

प्रकाश ओ रही जे दिखा, प्रकाश ओ रही जे दिखा।

आद अन्त ऐ जोत प्रकाशे, प्रकाश ओ रही जे दिखा।।

ध्वनिः-

हो जी चतुर्भुजधारी, हर अन्दर है जोत तुम्हारी।।

सजनों इसीलिए सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया है कि जो मन-मन्दिर प्रकाश है, वही जग अन्दर है। इसके अतिरिक्त सब माया है। अतः इस सत्य को जानो, मानो और मायातीत हो जाओ।

अब कल से चालीस दिन का चालीसे के यज्ञ का शुभारम्भ होना है। इन चालीस दिनों की आपको सारी बात बता दी गई है और साथ ही परिणाम सहित आपको यह भी बता दिया गया है कि नीतिनुसार अब से आपके अन्तर्घट का वातावरण हर प्रकार से किस प्रकार निर्मल रहना चाहिए।

फिर सजनों जैसा कि सबसे पहले भी आपको कहा गया है कि परस्पर सजनभाव और 'जी-जी' का व्यवहार आज से ही आरम्भ कर देना है। इस बात में जो भी कमज़ोर पड़ा वह वापिस जाएगा। सत्संग में भी किसी ने फालतू बातें यानि घरेलू बातें नहीं करनी। जो कुछ भी करना है वह वसुन्धरा से बाहर जाकर करना है। इस संदर्भ में मानो कि जब नीति ही नहीं अपनानी तो यहाँ आने का क्या फायदा। इसी तरह जो वसुन्धरा में सजन रहते हैं उनको खुद पर नियन्त्रण रखते हुए साथ ही बच्चों पर नियन्त्रण रखना है ताकि हर सजन चरित्रता का प्रतीक बना रहे। इसलिए सारे माता-पिता भी सतर्क हो जायें व बच्चे भी सतर्क हो जायें। किसी कारण से भी यहाँ के वातावरण को हम कुछ ऐसा-वैसा बर्दाश्त नहीं कर सकते क्योंकि फिर जब कुछ करा जाएगा तो रोवोगे व चिल्लाओगे। आपको वो पीड़ा न भुगतनी पड़े, अतः अभी से सम्भल जाना। अब आप समझ सकते हो कि हमें ऐसा क्यों कहना पड़ा है।

इसी में सजनों अपनी भलाई मानो तभी आपका जीवन सफल है।

अब सबका चालीस दिन का चालीसा शुभ हो और सभी वांछित परिणाम पाने के योग्य बनो, हमारी यही शुभकामनाएँ हैं।

नोटः-

सजनों आप सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ से उद्धृत जो विचारधारा है, उसको धारने में कमज़ोर न पड़े इस हेतु चालीसे के दौरान हर पंद्रह दिन में होने वाली ध्यान कक्ष की वीडियो क्लास आपको घर बैठे ही साढ़े बारह से एक बजे के मध्य देखने को मिलेगी ताकि आपका उत्साह और निरन्तरता कमज़ोर न पड़े।